ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, कृषि मौसम विभाग
जलवायु परिवर्तन पर उच्च अध्ययन केन्द्र
डा0 राजेन्द्र प्रसाद केन्द्रीय कृषि विश्वविद्यालय
पूसा,समस्तीपुर (बिहार)–848125

बुलेटिन संख्या–१६
दिनांक- शुक्रवार, २४ फरवरी, २०२३

विगत मौसम पूर्वानुमान अवधि का आकलन

मौसमीय वेधशाला पूसा के आकलन के अनुसार पिछले तीन दिनों का औसत अधिकतम एवं न्यूनतम तापमान क्रमशः 30.3 एवं 13.2 डिग्री सेल्सियस रहा। औसत सापेक्ष आर्द्रता 99 प्रतिशत सुबह में एवं दोपहर में 45 प्रतिशत, हवा की औसत गति 2.7 कि0मी0 प्रति घंटा एवं दैनिक वाष्पन 3.2 मि0मी0 तथा सूर्य प्रकाश अवधि औसतन 6.4 घन्टा प्रति दिन रिकार्ड किया गया तथा 5 से0मी0 की गहराई पर भूमि का औसत तापमान सुबह में 17.1 एवं दोपहर में 33.4 डिग्री सेल्सियस रिकार्ड किया गया। इस अवधि में मौसम शुष्क रहा।

मध्यावधि मौसम पूर्वानुमान
(25 फरवरी –01 मार्च, 2023)

ग्रामीण कृषि मौसम सेवा, डा0आर0पी0सी0ए0यू0, पूसा, समस्तीपुर एवं भारत मौसम विज्ञान विभाग के सहयोग से जारी 25 फरवरी –01 मार्च, 2023 तक के मौसम पूर्वानुमान के अनुसारः–

- पूर्वानुमान की अवधि में उत्तर बिहार के जिलों में आसमान प्रायः साफ तथा मौसम के शुष्क रहने का अनुमान है।
- इस अवधि में अधिकतम तापमान 32 से 33 डिग्री सेल्सियस तथा न्यूनतम तापमान 14 से 16 डिग्री सेल्सियस के बीच रहने का अनुमान है।
- पूर्वानुमानित अवधि में औसतन 5–6 कि0मी0 प्रति घंटा की रफ्तार से मुख्य रूप से पछिया हवा चलने की सम्भावना है। हलाकि 27–28 फरवरी को समस्तीपुर, वैशाली, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, मधुबनी, सीतामढ़ी तथा शिवहर जिलों में पूरवा हवा भी चल सकती है।
- सापेक्ष आर्द्रता सुबह में 80 से 95 प्रतिशत तथा दोपहर में 45 से 55 प्रतिशत रहने की संभावना है।

• समसामयिक सुझाव

- कुछ दिनों से तापमान में वृद्धि होने के वजह से अधिकतम तथा न्यूनतम तापमान, सामान्य तापमान से अधिक बना हुआ है जिसके कारण गेहूं के फसल को नुकसान होने की सम्भवना है। अतः किसान भाई को सलाह दी जाती है कि वो अपने खेतों में सिचाई कर नमी बनाये रखे जिससे गेहूं की फसल को अधिक तापमान से बचाया जा सके तथा उत्पादन में कमी ना आने पाए।
- जो गेहूं अभी दुग्धावस्था में है उसमें उच्च तापमान के कुप्रभाव को कम करने के लिए पोटैशियम १०–२– ग्राम मात्रा प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें।
- इस मौसम में लाही कीट के विस्तार की संभावना अधिक रहती है। अतः पिछात सरसों, पिछात फूलगोभी, पत्तागोभी अन्य सब्जियों की फसल में इस कीट की निगरानी करें। फसल में इस कीट का प्रकोप दिखने पर बचाव के लिए डाईमेथोएट 30 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल कर समान रुप से छिड़काव करें।
- अरहर की फसल में फल–छेदक कीट की निगराणी करे। इस कीट के पिल्लू अरहर की फलियों में घुसकर बीजों को खाती है, जिससे उपज में काफी कमी आती है। इस कीट से बचाव के लिए करताप हाईड्रोक्लोराइड दवा 1.5 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें।
- गरमा मूंग तथा उरद की बुआई के लिए खेत की तैयारी करें। बुआई से पूर्व खेत की जुताई में 20 किलोग्राम नेत्रजन, 45 किलोग्राम स्फूर, 20 किलोग्राम पोटाष तथा 20 किलोग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। मूंग के लिए पूसा विषाल, सम्राट, एस0एम0एल0–668, एच0यू0एम0–16 एवं सोना तथा उरद के लिए पंत उरद–19, पंत उरद–31, नवीन एवं उत्तरा किस्में बुआई के लिए अनुषंसित हैं। बीजदर छोटे दानों के प्रभेदों हेतु 20–25 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर तथा बड़े दानों के प्रभेदों हेतु 30–35 किलो ग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। कृषक भाई बुआई पूर्व बीज का प्रबंध प्रमाणित स्त्रोत से सुनिष्चित कर लें।
- गरमा मौसम की सब्जियों की बुआई करें। 150–200 क्विंटल प्रति हेक्टेयर की दर से गोबर खाद की मात्रा पूरे खेत में अच्छी प्रकार विखेरकर मिला दें। कजरा (कटुआ) पिल्लू से होने वाले नुकसान से बचाव हेतु खेत की जुताई में क्लोरपायरीफॉस 20 ई0सी0 दवा का 2 लीटर प्रति एकड़ की दर से 20–30 किलो बालू में मिलाकर व्यवहार करें। सब्जियों में निकाई–गुड़ाई एवं सिंचाई करें।
- सूर्यमुखी की बुआई के लिए मौसम अनुकूल है। बुआई से पुर्व 100 क्विंटल कम्पोस्ट, 30 किलोग्राम नेत्रजन, 80 किलोग्राम स्फुर, 40 किलोग्राम पोटास प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। बीज दर संकर किस्म के लिए 5 किलोग्राम तथा संकुल किस्म के लिए 8 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर रखें। बुआई के समय सल्फरयुक्त उर्वरक ज्यादा उपयुक्त है। अतः 30 से 40 ग्राम गंधक प्रति हेक्टेयर की दर प्रयोग करें।
- बसंतकालीन मक्का की बुआई करें। जुताई से पूर्व खेतों में प्रति हेक्टेयर 15–20 टन गोबर की खाद, 40 किलोग्राम नेत्रजन, 40 किलोग्राम स्फुर एवं 30 किलोग्राम पोटास का व्यवहार करें। बुआई के लिए सुवान, देवकी, गंगा 11, शक्तिमान 1 एवं 2 किस्में अनुशंसित है। बीज दर 20 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की दर से व्यवहार करें। प्रति किलोग्राम बीज को 2.5 ग्राम थीरम या कैप्टाफ द्वारा उपचारित कर बुआई करें। रवी मक्का की धनबाल व मोचा निकलने से दाना बनने की अवस्था वाली फसल में प्रयाप्त नमी बनाए रखें।
- इस मौसम में प्याज की फसल में थ्रिप्स कीट का आक्रमण हो सकता है । बचाव के लिए प्रोफेनोफॉस 50 ई0सी0 दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी या इम्डिाक्लोप्रिड दवा का 1.0 मि0ली0 प्रति 4 लीटर पानी की दर से घोलकर छिड़काव करें। अच्छे परिणाम हेतु चिपकाने वाला पदार्थ जैसे टीपोल 1.0 मि0ली0 प्रति लीटर पानी की दर से घोल में मिलावें।
- चारा के लिए ज्वार, मकई और बाजरे की बुआई करे। चारे की लगी हुई फसलें जैसे–जई, बरसीम एवं लूसर्न की कटाई 25–30 दिनों के अन्तर पर करें। प्रत्येक कटनी के बाद खेतों में 10 किलोग्राम नेत्रजन प्रति हेक्टर की दर से उपरिवेशन करें।
- ठण्ड का मौसम समाप्त होने से गायों एवं बछियों की गर्मी (मद) में आने का समय है। उनके सफल गर्भाधान के लिए पर्याप्त हरा चारा सहित संतुलित आहार एवं ५० ग्राम मिनिरल मिक्सचर प्रतिदिन दें। खुरपका– मुहपका रोग का टीका लगवाएं। जिन पशुओं को जुलाई – अगस्त में टीका लगा है उन्हें भी पुनः टीका लगवाएं। टीका लगवाने से पूर्व अतः एवं बाह्य परजीवी नाशक दवा अवश्व पिलायें।

आज का अधिकतम तापमानः 29.4 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 1.9 डिग्री सेल्सियस अधिक	आज का न्यूनतम तापमानः 14.0 डिग्री सेल्सियस, सामान्य से 0.6 डिग्री सेल्सियस कम

(डॉ0 गुलाब सिंह)
तकनीकी पदाधिकारी (कृषि मौसम)

(डॉ0 ए. सत्तार)
वरीय वैज्ञानिक सह नोडल पदाधिकारी (कृषि मौसम)